क्षमा सर्वश्रेष्ठ गुण

श्री प्रेमसुख शर्मा
व्याख्याता - व्याकरण
श्री कल्याण राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज
सीकर, राजस्थान

सारांश -
क्षमा श्रेष्ठ गुण है, धर्म है तथा क्षमाशील ही सर्वत्र विजयी होता है। क्षमाभाव बड़ों को सदैव छोटों पर करना चाहिये यही बड़प्पन है। क्षमा से ही मनुष्य शक्ति सम्पन्न है। क्षमाशील यज्ञवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता और तपस्वी होता है तथा उच्च लोक को प्राप्त करता है। क्षमाशील पुरुष जगत् में सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है।

मुख्य शब्द - धर्म, अहिंसा, यज्ञ, शक्ति, क्षमावान्, यश

प्रस्तावना -

संसार में सब धर्मों में क्षमा सबसे श्रेष्ठ गुण है। भर्तृहरि ने कहा है ''क्षमा वीरस्य भूषणम्'' अर्थात् क्षमा वीर का आभूषण है। क्षमाशील मनुष्य को ही साधु पुरुष कहते हैं। क्षमाशील मनुष्य को ही स्वर्ग, यश और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भगवान श्री कृष्ण ने क्षमा के विषय में कहा है -

क्षमा यशः क्षमा दानं क्षमा यज्ञः क्षमाः दमः।
क्षमा हिंसा क्षमा धर्मः क्षमा चेन्द्रियनिग्रहः।।
क्षमा दया क्षमा यज्ञः क्षमयैव धृतं जगत्।
क्षमावान् ब्राह्मणो देवः क्षमावान् ब्राह्मणो वरः।।

अर्थात् क्षमा ही यश, दान, यज्ञ और मनोविग्रह है। अहिंसा धर्म और इन्द्रियों का संयम क्षमा के ही स्वरूप है। क्षमा ही दया और क्षमा ही यज्ञ है। क्षमा से ही हमारा जगत् टिका हुआ है, अतः जो ब्राह्मण क्षमावान् वह देवता कहलाता है, वही सबसे श्रेष्ठ है।

जैन दर्शन में पर्यूषण या दशलक्षण पर्व के दिनों में आध्यात्मिक तत्वों की हम आराधना करके अपना और अपने जीवन मूल्यों का स्पर्श करते हैं। इस पर्व की समाप्ति के ठीक एक दिन बाद विशेष पर्व मनाया जाता है और वह है क्षमावाणी पर्व। क्षमा याचना करना भी हम पर्व की तरह मनाते हैं जिसमें वर्षभर किये गये ज्ञात-अज्ञात कार्यों के लिये क्षमा याचना हमारी संस्कृति का उदात्त रूप है।

विदुर जी ने क्षमा की श्रेष्ठता बताते हुये धृतराष्ट्र से कहा कि -

ज्ञातः श्रीमत्तरं किंचिदन्यत् पश्यतं मतम्।
प्रभविष्णोर्यथा तात क्षमा सर्वत्र सर्वदा।।

अर्थात् तात ! समर्थ पुरुष के लिये सब जगह और सब समय में क्षमा के समान हितकारी और अत्यन्त श्री सम्पन्न बनाने वाला उपाय दूसरा नहीं माना गया है। क्षमा प्रसंग में कहा गया है कि जो शक्ति हीन है वह तो सबको क्षमा करे ही और जो शक्तिमान है वह भी धर्म की रक्षा के लिये क्षमा करें। जिसकी दृष्टि में अर्थ और अनर्थ दोनों ही समान है उसके लिये तो क्षमा सदा ही हितकारिणी होती है।

क्षमेद शक्तः सर्वस्य शक्तिमान् धर्मकारणात्।
अर्थानर्थौ समौ यस्य तस्य नित्यं क्षमा हिताः।।

रहीम दास जी ने कहा है -

क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उतपात।
कह रहीम हरि का घ्यौ, जो भृगुमारी लात।।

बड़ों को चाहिए कि छोटों को उनकी नासमझी के लिये क्षमा कर दें अर्थात् जो क्षमा करते हैं, वही बड़े हैं। भगवान विष्णु का बड़प्पन महर्षि भृगु के पद-प्रहार से किसी भी तरह कम नहीं हुआ।

अतः ईर्ष्या द्वेष रखने से आप स्वयं पर बोझ डाल रहे हैं। और दुःख को बुलावा दे रहे हैं। किसी को क्षमा कर हम किसी के प्रति अनुग्रह नहीं कर रहे, बल्कि स्वयं को चिन्तामुक्त कर रहे हैं। शम ही क्षमाशील साधकों को सिद्धि की प्राप्ति कराने वाला है। जिनमें क्षमा हैं, उन्हीं के लिये यह लोक और परलोक दोनों कल्याणकारक है।

क्षमाशील मनुष्य को कभी किसी को अपमान नहीं करना चाहिये। शक्तिशाली पुरुष सदा क्षमा करता है किन्तु शक्तिहीन मनुष्य क्रोध करता है।

क्षमावन्तं च देवेन्द्र नावमन्येत बुद्धिमान्।
शक्तस्तु क्षमते नित्यमशक्तः क्रुध्यते नरः।

शक्तिशाली का मन शक्ति से पूर्ण होता है, इस कारण उसे किसी को शक्ति दिखाने की इच्छा नहीं होती है। उसकी शक्ति का प्रभुत्व चहुं ओर फैला रहता है, इसी कारण वह क्षमाशील होता है।

क्षमा की श्रेष्ठता बताते हुये युधिष्ठिर ने द्रौपदी से कहा कि ''सुशोभने ! पुरुष को सभी आपत्तियों में क्षम्य भाव रखना चाहिये।

'क्षन्तव्यं पुरुषेणेह सर्वापत्सु सुशोभने।
क्षमावतो हि भूतानां जन्म चैव प्रकीर्तितम्।।

क्षमाशील पुरुष से ही समस्त प्राणियों का जीवन बताया गया है।

'क्षमा ब्रह्म सत्यं क्षमा भूतं च भावि च।
क्षमा तपः क्षमा शौचं क्षमयेदं धृतं जगत्।।

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा शौर्य है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत् को धारण कर रखा है। जो मनुष्य यह जानता है कि क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है,

क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र, वह सब कुछ क्षमा करने के योग्य हो जाता है। क्षमाशील मनुष्य यज्ञवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता और तपस्वी पुरुषों से भी ऊंचे लोक प्राप्त करते हैं। क्रोधी मनुष्य अल्पज्ञ होता है। क्षमावान् मनुष्य विद्वान् होते हैं। जब मनुष्य सब कुछ सहन कर लेता है, तब वह ब्रह्म भाव को प्राप्त हो जाता है। जिन मनुष्यों का क्रोध क्षमाभाव से दबा रहता है, उन्हें सर्वोत्तम लोक प्राप्त होते हैं। अतः क्षमा सबसे उत्कृष्ट मानी गई है। यदि मनुष्यों में पृथ्वी के समान क्षमाशील, पुरुष न हो तो मानवों में कभी सन्धि हो ही नहीं सकती, क्योंकि झगड़े की जड़ तो क्रोध ही है। क्षमाशील पुरुष इस जगत् में सर्वत्र सम्मान वाले हैं।

निष्कर्ष

'क्षमा'की महिमा हमारे शास्त्रों में सर्व़ दृष्टिगत है। अनेकों उदाहरण क्षमा के महत्व को दर्शाते हैं। क्षमाभाव सबसे बड़ा भाव है इसी भाव से ओत-प्रोत होने पर मनुष्य सदा सुखी रहता है और आत्मिक सन्तोष व आनन्द की प्राप्ति करता है। अतः क्षमा सर्वश्रेष्ठ गुण है।

संदर्भ

1. महाभारत, आश्वमेधिक पर्व, अध्याय 82
2. उद्योगपर्व, अध्याय 38 श्लोक 58
3. उद्योग पर्व 38, श्लोक 59
4. आदिपर्व, अध्याय 87/5-6
5. वनपर्व अध्याय-28, श्लोक 32
6. वनपर्व, अध्याय-28, श्लोक-37